Research Inspiration ISSN: 2455-443X
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

ijijkxr fpfdRlk i)fr dh mikn;rk% ,d 0k;fDrd v/;;u

Mk- vkj-,u- 'kek]
विभागाध्यक्ष, समाज शास्त्र एवं समाजकार्य
श्री सांई बाबा आदर्श महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

l{kfidk&

प्रस्तुत शोध पत्र में परम्परागत चिकित्सा पद्धति के प्रति आधुनिक चिकित्सकों एवं कुछ रोगियों के दृष्टिकोण को वैयक्तिक अध्ययन से प्रस्तुत किया गया है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति जनसमूह के सामाजिक आचार–विचार व प्रथागत मान्यताओं के रूप में विद्यमान हैं। परम्परागत चिकित्सक अपने ईलाज से पूर्ण उपचार का दावा करते हैं। इस सम्बन्ध में उस क्षेत्र में कार्यरत् आधुनिक चिकित्सकों से यह जानने का प्रयास किया गया है कि परम्परागत चिकित्सा पद्धति रोग निवारण में कहां तक कारगर है, परम्परागत चिकित्सा पद्धति की व्यावहारिक उपयोगिता कितनी है। अध्ययन क्षेत्र में बैगा गुनियों से ईलाज करा रहे/करा चुके रोगियों से भी यह जानने का प्रयास किया गया कि उन्हें उपचार से क्या लाभ हुआ है। वैयक्तिक अध्ययन के दौरान उस क्षेत्र में कार्यरत् आधुनिक चिकित्सकों से तथा रोगियों से इस सम्बन्ध में शोद्यार्थी द्वारा आवश्यक जानकारी संग्रहित कर शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

e[; 'kCn& परम्परागत चिकित्सा पद्धति, बैगा–गुनिया, वनोषधियां ।

iLrkouk&

परम्परागत चिकित्सा–पद्धति का अभिप्रायः उस परम्परागत पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होने वाले चिकित्सीय ज्ञान से है जिसके आधार पर विभिन्न रोग–दोषों का उपचार किया जाता है। इस चिकित्सा–पद्धति में रोगों की उत्पत्ति–सम्बन्धी अनेकों सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यतायें प्रचलित है जो कि अवैज्ञानिक तथा अर्द्धवैज्ञानिक दोनों ही है। इनमें रोग की अपेक्षा रोगी के समाजिक–सांस्कृतिक परिवेश को विशेष महत्व दिया जाता है। इसमें परम्परागत ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्ताक्षरित होता है जिसे चिकित्सक पूर्णरूपेण गोपनीय बनाये रखते हैं। परम्परागत चिकित्सा ज्ञान उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति में अनेकों पक्ष को समाहितकए रहती है। इसमें झाड़–फूंक सहित अनेकों धार्मिक क्रियाएं शामिल होती है। इसमें अनेकों वनोषधियों का भी भरपूर उपयोग मिलता है जिसके सेवन के लिये अनेकों अभिचार कर्म, झाड़–फूक, धार्मिक कर्मकाण्ड तथा दिवस–विशेषों का प्रयोग किया जाता है। इसके पीछे यह मनोवैज्ञानिक तथ्य कार्य करता है कि इसके अभाव में कोई भी वनोषधि प्रभावकारी नहीं हो सकती है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति में मुख्य रूप से चार पक्ष अर्न्तनिहित रहते हैः–

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

(1) सामाजिक पक्ष (2) सांस्कृतिक पक्ष

(3) मनोवैज्ञानिक पक्ष (4) धार्मिक पक्ष

lkekftd i{k में उस समाज की विभिन्न सामाजिक विशिष्टताओं का समावेश होता हैं।

lkLdfrd i{k में विभिन्न सांस्कृतिक तथ्यों का दखल रहता है।

eukoKkfud i{k में उस समाज विशेष के विशेष परम्परागत अभिमान्यतायें व विश्वास शामिल होते है।

/kkfed i{k इसके अर्न्तगत विभिन्न अलौकिक शक्तियों की कल्पना की गयी है। ये शक्तियां सर्वशक्तिमान इनकी नाराजगी से अनेकों रोग–व्याधियों की उत्पत्ति होती है, जिसके बल पर वह इन्हे अपने नियंत्रण में रख सकता है।

o;fDrd v/;;u&

vk/kfud fpfdRld

uke&d ¼lkdfrd uke½] tkfr&o';] /ke&fgUn] fyx&i:"k] ookfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&,e-ch-ch-, l-] vk;&45 o"k

श्रीमान् डॉ0 ‘क’ लखनपुर विकासखण्ड में चिकित्सा अधिकारी के पद पर कार्यरत है। अध्ययन क्षेत्र में लगभग 10–12 वर्षों से अपनी चिकित्सा सेवा प्रदान कर रहे है। लखनपुर विकासखण्ड में चिकित्सा क्षेत्र की उपलब्धता के प्रति इनकी स्वीकारोक्ति सहज है। परम्परागत चिकित्सका ज्ञान के प्रति इनका अभिमत है कि बैगा–गुनियाँ कई बार असाध्य रोगों का इलाज कर पाने में सफल होते हैं इनके मतानुसार गुनियों के इलाज के रूप में जड़ी बुटियां ही करगर होती है, शेष धार्मिक कर्मकाण्ड निरर्थक हैं इनका परम्परागत चिकित्सा पद्धति के संदर्भ में मानना है कि यह पद्धति अवैज्ञानिक व वैज्ञानिक दोनों ही हैं इनका कहना था कि जड़ी–बूटियों पर व्यापक वैज्ञानिक शोध की आवश्यकता है। दुनिया में आधुनिक चिकित्सा के क्षमें में वनोषधियों पर नित नये प्रयोग हो रहे है। अनेकों ऐसी औषधियां है जिसका प्रयोग हम लोग करते है। जनजातियों के हमेशा स्वास्थ्य बने रहने के विषय में कहते है कि ठनहें प्रतिदिन पौष्टिक भोजन तथा विश्राम मिलना चाहिए। इनके मतानुसार इस क्षेत्र में सर्वाधिक रोगी त्वचा विकार तथा उल्टी दस्त से पीड़ित हैं ये बैगाओं के इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते है कि उनके क्षत्र में सर्वाधिक मलेरिया का प्रकोप हैं इनका कहना था कि शिक्षा का प्रचार प्रसार करके तथा गरीबी दमर करके इन्हें आधुनिक चिकित्सा सेवायें दी जा सकती है। इनके पास उपलब्ध कांकड़के अनुसार स्वस्थ्य केन्द्रों में प्रतिदिन औसतन 8 मरीज आते हैं जिनमें अधिकतर उल्टी दस्त से पीड़ित होते है। परम्परागत

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

चिकित्सा पद्धति के प्रोत्साहन में विषय में इन्होंने बताया कि इनमं प्रसव कार्य कराने वाली दाईयों को स्वास्थ्य विभाग की ओर से प्रशिक्षण दिया जाता है व एक प्रसव किट प्रदान किया जाता है ताकि ये अपने क्षेत्र के आसानी से प्रसाव कार्य सम्पादित कर सके। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, स्वासयि कार्यकर्ता तथा विभाग के अन्य कर्मचारियों के क्षरा गांवो के स्वास्थ्य रक्षक दवाईयों क्लोरोक्वीन बांटी जाती है तथा समय–समय पर शिविर लगाकर टीकाकरण किया जा रहा है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति व आधुनिक चिकित्सा पद्धति के मध्य तालमेल का ये स्वागत करतें हैं। इन्हे बेहतर स्वास्थ्य सुविधा भी उपलब्ध हो सकेंगी। कुल मिलाकर इनकी सोच आधुनिक चिकित्सा व परम्परागत चिकित्सा के प्रति सामंजस्य पूर्ण है।

uke&[k ¼lkadfrd uke½] tkfr&czkgE.k] /ke&fgUnw] fyax&iq:"k] oSokfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&,e-ch-ch-,l-] vk;q&47 o"kZ

श्रीमान् डॉ0 ’ख’ सरगुजा जिले के उदयपुर विकासखण्ड में चिकित्सा अधिकारी के पद पर कार्यरत है। आप इस क्षेत्र में लगभग 7–8 वर्षों से चिकित्सा सेवा प्रदान कर रहे है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति के प्रति इनका सोच मिश्रित है। ये इसे पूरी तरह से उचित नहीं मानते हैं इनके मतानुसार किसी रोग के उत्पन्न होने पर ग्रामीण झांड़, फूंक कराने लगते हैं, जो कि सर्वथा गलत है। क्षेत्र में स्वास्थ्य समस्या के रूप में यह प्रबल कारण है। इनका कहना था कि रोग के अंतिम अवस्था में ही ज्यादातर मरीज स्वास्थ्य केन्द्रों में आते है। जिससे रोगी की स्थिति बिगड़ती है। इनके मतानुसार किसी भी रोग का उपचार झाड़फूंक व अन्य कर्मकाण्ड के द्वारा संभव नहीं है। जनजातियों में व्यापक शिक्षा व जागरूकता का प्रचार–प्रसार करके रोगों को दूर किया जा सकता है। बैगा, गुनियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाली जड़ी बुटियों में वैज्ञानिकता को ये स्वीकार करते हैं इनके पास प्रतिदिन आने वाले रोगियों की संख्या 5–7 है जिनमें टी.बी., ज्वर, उल्टी, दस्त, के मरीज अधिक होते हैं। इन्होंने इस तथ्य के प्रति अनभिज्ञता जाहिर की कितने रोगी पूर्ण ठीक होते हैं क्योंकि ठीक होकर कोई भी रोगी डॉ. को बताने नहीं आता है। जनजातियों की प्रमुख स्वास्थ्य समस्या के रूप में ये पौष्टिक भोजन, शुद्ध पेयजल का अभाव तथा कई अंधविश्वास को मानते हैं। जनजातियों को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के करीब लाने के संदर्भ में इनका अभिमत था कि लोगों को जागरूक बनाये जाने की आवश्यकता है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति पूर्णतः कारगर है, ऐसा ये स्वीकार नहीं करते किन्तु जड़ी–बुटियों के महत्व को स्वीकार करते है। अपने क्षेत्र में महिला चिकित्सक की कमी तथा अन्य चिकित्सीय सुविधाओं की कमी को भी ये प्रमुख समस्या मानते हैं। गर्भावस्था के दौरान माता को पूर्ण पौष्टिक भोजन न मिलना, धूप में घंटों काम करना, ढ़ोढ़ी के जल का सेवन, दो बच्चों के बीच निश्चित अंतराल न होना, शारीरिक स्वच्छता के प्रति उदासीनता इत्यादि प्रमुख कारण है, जिससे इनकी

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

समस्याएं बढ़ती है। इनका मत है कि इन्हें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने हेतु इनमें बैगा गुनियों की मदद ली जानी चाहिए। इस हेतु एक कार्य योजना बनाकर कार्य किया जाना चाहिए। दाईयों के समान इन्हें भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि प्राथमिक स्तर पर गांव में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा सके। दोनों चिकित्सा पद्धति के मध्य सामंजस्य के प्रति इनका रूझान सराहनीय है।

uke&x ¼lkdfrd uke½] tkfr&o';] /ke&fgUn] fyx&i:"k] ookfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&,e-ch-ch-,l-] vk;&48 o"k

श्रीमान् डॉ0 'ग' अम्बिकापुर विकासखण्ड में प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं। जनजाति क्षेत्र में लगभग 15–18 वर्षों से चिकित्सा सेवा से जुड़े हुए है। इनके पास प्रतिदिन 5–6 मरीज आते हैं जिनमें अधिकतम मौसमी बीमारियों तथा पेटजनित विकारों से ग्रसित होते है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति के प्रति इनका रूख काफी सकारात्मक हैं इनका अभिमत है कि परम्परागत चिकित्सा पद्धति में प्रयुक्त होने वाली ऐसी अनेकों वनोषधियां है जिनके सेवन से कई रोगों का उपचार संभव है। हालांकि बैगा, गुनियों के द्वारा किये जाने वाले झाड़ फूंक व कर्मकाण्डों को ये उचित नहीं मानते हैं। इनके मतानुसार पण्डों जनजाति में पेटजनित रोग, त्वचा विकार तथा स्त्रीजन्यविकार बहुतायत में है। ग्रामीणों में भोजन की कमी, गरीबी प्रमुख समस्याएं है। बरसात के दिनों में दूषित जल का सेवन अनेकों संक्रामक रोगों को जन्म देते हैं इनका कहना है कि ''मैं अपने पास आने वाले रोगियों की सामाजिक पृष्ठभूमि का अवश्य ही ध्यान रखता हूं जिससे मुझे उनके रोगों के उपचार में मदद मिलती है।'' रोगों के उत्पति में उनकी सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का विशेष प्रभाव पड़ता है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति व परम्परागत चिकित्सा पद्धति के मध्य सामंजस्य के विषय में इनका कहना था कि यह प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी हैं इन्होंने स्वयं ऐसी कई प्राकृतिक व घरेलू चिकित्सा बताई जिससे अनेक रोगों का इलाज संभव हैं कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि श्रीमान् ''ग'' का परम्परागत चिकित्सा के प्रति रूख सकारात्मक है।

uke&p ¼lkdfrd uke½] tkfr&xkM] /ke&fgUn] fyx&i:"k] ookfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&,e-ch-ch-,l-] vk;&45 o"k

श्रीमान् डॉ0 'च' एक प्रसिद्ध चिकित्सक हैं ये लगभग 20–22 वर्षों से अपने क्षेत्र में सेवारत् है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति के प्रति इनका दृष्टिकोण मिलाजुला है। इनके मतानुसार पण्डो जनजाति के लोग किसी भी रोग व्याधियों के होने पर तत्काल झाड़फूंक कराने लगते है। वहां से असफल होने पर ही वे रोग की अंतिम अवस्था में डॉक्टर के पास आते हैं अतः कई बार इनका बचना मुश्किल हो जाता हैं जिससे आधुनिक चिकित्सा पद्धति के प्रति इनके अविश्वास का प्रमुख कारण है। इनके मतानुसार इनके क्षेत्र में ग्रामीणों में मुख्य रूप से संक्रामक बीमारी तथा पेटजनित रोग बहुतायत में होते है जिसका प्रमुख कारण शुद्ध पेयजल का अभाव,

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

बांसी भोजन का सेवन तथा गरीबी हैं इन्होंने परम्परागत चिकित्सकों के द्वारा प्रयुक्त जड़ी–बूटियों के प्रयोग को पूर्णतः वैज्ञानिक होना बताया है।

uke&N ¼lkdfrd uke½] tkfr&xkM] /ke&fgUnw] fyax&iq:"k] oSokfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&,e-ch-ch-,l-] vk;q&45 o"kZ

श्रीमान् डॉ0 'छ' एक प्रसिद्ध चिकित्सक हैं इन्होंने परम्परागत चिकित्सा पद्धति को आयुर्वेदिक पद्धति का प्राचीन स्वरूप बताया। इनका कहना था कि ये स्वयं ग्रामीण परिवेश से आए है जहां पर अनेकों रोग–दोष होने पर घरेलू चिकित्सा की जाती थी। परम्परागत चिकित्सा पद्धति घरेलू चिकित्सा का ही प्रतिरूप हैं। इनके मतानुसार ग्रामीणों का त्वचाजनित रोग, गुप्त रोग तथा उल्टी–दस्त की समस्याएं ज्यादा होती है। जिसका मुख्य कारण अशिक्षा गरीबी व जागरूकता मे कमी हैं इन्होंने परम्परागत चिकत्सकों की इलाज पद्धति पर व्यापक वैज्ञानिक शोध की आवशकता पर जोर दिया। इन्होंने इस बात को मानने से इनकार किया कि ये परम्परागत चिकित्सा सारे रोगों हेतु कारगर पद्धति है।

uke&t ¼lkdfrd uke½] tkfr&ekyh] /ke&fgUnw] fyax&iq:"k] oSokfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&ikWyhVsfDud-] vk;q&52 o"kZ

श्रीमान् 'ज' पेशे से सब इंजीनियर हैं। ये लगभग 4–5 वर्षों से डायबिटीज की बीमारी से पीड़ित है। इनके शरीर का वजन दिनों पे दिन बढ़ता जा रहा था। इन्होंनें काफी एलौपैथिक दवाईयों ली किन्तु तत्काल आराम के अलावा इनकी बीमारी बनी रही। अंत में इन्होंने ग्राम जजगी के एक गुनिया से ईलाज कराया। ये स्वयं बताते हैं कि गुनिया इन्हें प्रति मंगलवार और शनिवार खाली पेट अपने घर बुलाता था तथा एक पेड़ की जड़, पत्ती व फूल पीस कर काढ़ा बनाकर देता था। करीब 3 महीने की चिकित्सा के बाद इनका ब्लड शुगर काफी नियंत्रित हो गया। बाद में इन्होंने डॉक्टर से चेकअप कराया तो परिणाम अच्छा मिला। ये स्वयं करते हैं ''मेरे साथ चमत्कार हुआ'' मुझे स्वयं इतनी जल्दी ठीक हाने की उम्मीद नहीं थी। इलाज के एवज में गुनिया ने इनसे नारियल, चावल व नगद रूपये लिया था। श्रीमान् ''ज'' परम्परागत चिकित्सा पद्धति के महत्व को स्वीकार करते है।

uke&> ¼lkdfrd uke½] tkfr&i.Mk] /ke&fgUnw] fyax&efgyk] oSokfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&lk{kj] vk;q&40 o"kZ

श्रीमति 'झ' ग्राम बेलदगी की रहने वाली हैं इसका ढ़ाई वर्ष का एक पुत्र है। जिसका एक जांघ काफी मोटा हो गया था। बच्चा स्वयं चल फिर नहीं पाता था। इसने इसका इलाज अम्बिकापुर के प्रतिष्ठित डॉक्टर से कराया किन्तु कोई आराम नहीं मिला। डॉक्टर का कहना था कि बच्चे की पैर की हड्डी में इन्फेक्शन है जिसके

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

कारण लगातार मवाद का निर्माण हो रहा है। इलाज में असफल होने पर डॉक्टर ने इन्हें रायपुर जाकर इलाज कराने की सलाह दी। अंत में ये गांव के एक गुनिया तपेश्वर के पास गई। लगभग एक महीने तक गुनिया ने इसका इलाज किया। श्रीमति 'झ' ने बताया कि 'गुनिया ने पहले दिन उससे एक नारियल, चावल व सिन्दुर मंगाया, फिर जंगल जाकर कुछ पत्तियां लेकर आया''। प्रतिदिन उसका लेप बनाकर बच्चे के पैर में लगाता था तथा उसी पत्ती को पानी के साथ पीसकर बच्चे को पिलाता भी था। लगभग एक महीने बाद उसका बच्चा स्वयं अपने पैरों पर से चलने लगा। अध्ययन के दौरान उक्त ग्रम के कुछ और मरीज ऐसे भी थे जिन्होंने उस गुनिया के इलाज से लाभ होने की बात स्वीकार की। इलाज पूर्ण होने पर गुनिया के द्वारा मुर्गे, बकरे की बलि भी दी जाती थी।

uke&M ¼lkdfrd uke½] tkfr&vxzoky] /ke&fgUnw] fyax&iq:"k] oSokfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&,e-ch-ch-, l-]vk;q&42 o"kZ

श्रीमान् 'ड' अम्बिकापुर शहर में निवास करती है। एक डॉक्टर के यहां इनका ईलाज हो रहा था। इन्होने बताया कि इनका गर्भावस्था के दौरान आठवें महीने में पेट में हलचल बंद हो गई तो इन्होंने समीप की निवासरत् एक दाई से सम्पर्क किया। इस दाई ने इनके सूक्ष्ण निरीक्षण किया और एक धागे की सहायता से नाम लिया तथा कहा कि गर्भस्थ शिशु मर गया है, तब शहर के एक स्त्रीरोग विशेषज्ञ को दिखाया तो उन्होंने पहले सोनोग्राफी की तथा उसकी सहायता से निरीक्षण कर गर्भस्थ शिशु को मृत बताया। यहां पर यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उस दाई ने अपने परम्परागत अनुभव से उस शिशु का अवलोकन कर उसे मृत घोषित किया वहीं स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉक्टर ने सोनोग्राफी की सहायता से बताया कि गर्भस्थ शिशु मृत है।

uke&; ¼lkdfrd uke½] tkfr&xIrk] /ke&fgUnw] fyax&iq:"k] oSokfgd fLFkfr&fookfgr] f'k{kk&lkroha] vk;q&27 o"kZ

कुमारी 'य' विगत 3–4 वर्षों से सफेद दाग से पीड़ित थी। काफी एलौपैथिक चिकित्सा कराने के बाद भी इन्हें राहत नहीं मिली। तब ये ग्राम बढ़नीझरियां के एक परम्परागत चिकित्सक के पास ईलाज कराने गई। ये चिकित्सक इन्हें प्रतिदिन खाली पेट अपने घर में बुलाता था तथा मंत्रोंपचार से अभिमंत्रित कर पंचगव्य का पान कराता था। इस चिकित्सक ने इन्हें जड़ी–बूटी के रूप में कुछ पत्तियां भी दी, जिसे प्रतिदिन पीसकर रस पीने तथा शरीर में लेप लगाने को कहा। लगभग 40 दिन की चिकित्सा के बाद इनके शरीर का दाग शनैःशनैः कम होने लगा। कुमारी 'य' इसे अपने साथ हुआ किसी चमत्कार से कम नहीं मानती हैं

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

ifj.kke vkj 0;k[;k&

उपरोक्त सारे वैयक्तिक अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि परम्परागत चिकत्सा पद्धति अनेकों असाध्य रोगों के ईलाज में सक्षम हैं आधुनिक चिकित्सक भी इनके महत्व को स्वीकार करते है। इस परम्परागत चिकित्सा पद्धति पर व्यापक शोध कर इसमें निहित वैज्ञानिक कारणों का पता लगाकर एक विस्तृत कारगर पद्धति का विकास किया जा सकता है। पण्डों जनजाति में विभिन्न रोग–प्रकृति कारक संबंध मथा उनके उपचार की परम्परागत चिकित्सा पद्धति में उनके सामजिक, सांस्कृतिक कारकों का स्पष्ट दखल मिलता है। अपने सामुदायिक आदर्श–प्रतिमानों, अर्न्तविशिष्टता का स्वास्थ्यकर दशाओं से गहन सामंजस्य आवश्यक है। इनकी परम्परागत पद्धति आज उस मोड़ की ओर अग्रसर हो रही है जहां पर आधुनिक चिकित्सा पद्धति से तालमेल आवश्यक है। अभाव, गरीबी तथा उपेक्षा के मध्य जीने वाले इस समुदाय को यह पद्धति गहन मानसिक संतुष्टि प्रदान करती है। आधुनिक चिकित्सकों को चाहिए कि वे इनके प्रथागत मूल्यों के प्रति सकारात्मक रूप प्रदर्शित करें ताकि आधुनिक चिकित्सा पद्धति और उनके मध्य मनौवैज्ञानिक दूरी को कम किया जा सके। परम्परागत चिकित्सा पद्धति में निहित वैज्ञानिक पक्षों में गहन शोध समय की मांग हैं ताकि एक बेहतर प्राकृतिक, विपरीत प्रभाव रहित पद्धति विकसित हो सके। आज पूरी चिकित्सा पद्धति वनौषधियों के महत्व को स्वीकार भी करती है जिससे अनेकों असाध्य रोगों का उपचार संभव है।

जनजातियों के परम्परागत चिकित्सा पद्धति में निहित वैज्ञानिक पक्षों को ज्ञात कर आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ तालमेल बनाया जाना चाहिए ताकि इनके परम्परागत मूल्य भी बरकरार रहे और इन्हें बेहतर चिकित्सीय सुविधाएं भी मिल सके। यह समय की आवश्यकता भी है और चिकित्साशास्त्रियों के समक्ष चुनौती भी। प्रस्तुत शोध अध्ययन का यह उद्देश्य भी है और निष्कर्ष भी।

lanHkZ&

1. Anil Kumar, (2006): Ethno-medicine, Indigenous Healers and Disease Healing Practies among the Kolam of Adilabad district of Andhra Pradesh. Journal of Social Anthropology 3(1): 75-88.
2. A.K. Kalla, Joshi. P.C.: Tribal Health & Medicines, Concepts Publishing Company, 2004.
3. Ackerneeht, H. (1942): Probleme of Primitive Medicine & Culture Patterns. Bull. History, 12:545-74.
4. Ackrknecht, E.H.: A Short History of Medicine, Ronalc Press, New York, 1955.
5. Ahmed, et al. (1973): Maternal Health, Child Health and Family Planning: A Plea for Integrated Approach. Indian Paediatrics 10 (11): 637-645.
6. Ajeet Prasad: Knowledge, Belief & Practices in Relation to Malaria among the Tribal of Gumla, Jhankhand, South Asian Anthroplologist 6(2): 185-188.
7. Bairathi, Shashi: Tribal Culture, Economy and Health. Rawat Pulbication, New Delhi, 199
8. Umar, N. & Maitra, A.K. (1990): Reproductive Performances of Tharu Women, the Eastern Anthropologist 28 (4): 249-257.

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed & Opened Access Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-III
June 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

9. Kuriyan, J. (1985): Traditional practioners of Medicine in a Tribal Area: Their Intergration with Existing Health Care System, Health and Population Perspective and Issues 8(2): 103-107.
10. Primary Health Care: A Joint Report Director Genral, WHO and Executive Directer of UNICEF, 23-33, 1978.
11. Raju, S.S. (1986) : Evaluation of Health Care System : Some Guidelines, Health and Population Perspective and Issues 9(2) : 80-86.
12. Ramachandran, L. (1987): Maternal and Child Health and Family Planing: Percepation and links. Journal of Family Welfare 34(2): 3-15.
13. Ramasomy, K.: Present Health Practices and Health Care Services for Tribal People.